।। सत्तगुरू सत्ता को अंग ।।मारवाडी + हिन्दी(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधािकसनजी महाराज और जे.टी.चांडक इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे, समजसे, अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नहीं करना है। कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नहीं हुआ, उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढ़नेके लिए लोड कर दी।

राम		राम
राग	।। अथ सत्तगुरू सत्ता को अंग लिखंते ।।	राम
राम	।। चौपाई ।। सतगुर सता न बर्णी जाई ।। सो मण रास बानगी माई ।।	राम
राम	राराचुर रासा न बना जोई ।। सा नन रास बानमा नाई ।।	राम
राग		
	THE T THE THE STATE OF THE THE TOTAL & ART THE THE STATE & LICE ARE	
राग	जगत को सतगुरु सत्ता समजे इसलिये जगत मे के मायावी दाखले देकर सतगुरु सत्ता	
राम	। समजाने की कोशिश की है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यह सतगुरु	
	सत्ता शिष्य में जब जागृत होती तब शिष्य याने हंस काल का ३ लोक १४ भवन का	राम
राग	भवसागर पार करके महासुखो के अगम देश मे जाता ।।।१।।	राम
राग्	चुगे चिकोर चंद मुख जोवे ।। सितळ अगन किसी बिध होवे ।।	राम
	ससा का इम्रत बस सरारा ।। साचा गरू चद्रमण हारा ।।२।।	
राम		
	ा अमृत बसा रहता । इस अमृत में यह सत्ता रहती की इससे चांद को सुरज का अती अभी केन भी चंदन के समान शिवन सम्बद्धान नगता । ऐसे चांद से चकीर मधी की	
राग्	भारी तेज भी चंदन के समान शितल सुखदायक लगता । ऐसे चांद से चकोर पक्षी को प्रिती रहती । इस प्रिती के कारण वह चांद के मुख को निहारते रहता । इस निहारने के	राम
राग्	प्रकृतीसे चांद के तन में का अमृत चकोर के नयनद्वार से चकोरपक्षी के तन में उतरता ।	राम
राग	यह अमृत चकोर पक्षी मे प्रगट हो जाने के कारण चांद के समान उसे भी अग्नी के निखारे	राम
	शितल लगते और वह पक्षी निखारे खाने में आनंद लेता ।	राम
राम	चंद्रमणी हिरा पूनम के चांद के प्रकाश से काच के तुकड़ो को	
राम	भी अपने सत्ता के बल से अपने इतनाही तेजस्वी हिरा	राम
राम	बनाता वैसेही सच्चे सतगुरु रहते । ये जैसे काल से मुक्त	
	अमालक ह पसहा शिष्य का काल स मुक्त अमालक बनात	
राग्	and and are all and to far an fare an are to	राम
राम	यूं सिष कोई क्रणी का हीणा ।। आप समान करे प्रबिणा ।।३।।	राम
राम	जैसे दिपक राग से न चेता हुवा दिया अपने आप चेत जाता वैसेही सच्चे सतगुरु से	राम
राग	्रिक्त के भ्रम में अंधा हुवा हंस चेत जाता याने वैराग्य विज्ञान ज्ञानी	राम
राग	मोहमाया के भ्रम मे अंधा हुवा हंस चेत जाता याने वैराग्य विज्ञान ज्ञानी बन जाता । शिष्य कैसे भी कर्णी का हिन रहा तो भी वह शिष्य सतगुरु	राम
राम	मे के सतस्वरुप विज्ञान के समान सतस्वरुप विज्ञानी बन जाता ।।।३।।	राम
राग	धिन धिन ज्यांरी सफळ कमाई ।। ज्यां संगत सतगुर की पाई ।।	राम
राग	उड उड भुजग चदण बण जावे ।। यू सिष तनकी तपत बुझावे ।।	राम
	9	
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट	

राम	।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
राम	अंग ज्वाळा ब्यापे नहीं कोई ।। युं संगत सतगुर की होई ।।४।।	राम
राम	जिसे सतगुरु की संगत मिली उसकी काल से मुक्त होने की कमाई सफल हुई । वे धन्य	
राम	है। वे धन्य है और उनकी कमाई भी धन्य है। भुजंग याने पंख आया हुवा जहरीला नाग	
	। इसके घटमे उसके विषकारण सहे नही जाती ऐसी भारी तपन प्रगट हुई रहती । सहे नही जाती ऐसे तपन को मिटाने के खोज में वह उड़ते रहता । जैसेही उसे चंदन का पेड	
	महा जाता एस तपन का मिटान के खाज में वह उड़त रहता । जसहा उस चंदन का पड़ मिलता वह उससे लपेटता । लपेटते ही उसकी भारी तपन मिट जाती और वह विष के	
राम	तपन से मुक्त होता । इसीप्रकार त्रायमान त्रायमान करने लगानेवाली आधी,व्याधी,उपाधी	
राम	इन तिन्हों तापो की ज्वाला सतगुरु की संगत प्राप्त होते ही शिष्य की नष्ट हो जाती	JIL
राम	111811	राम
राम	जडी सजीवण जीव जिवाया ।। क्या करणी मुडदो कर आया ।।	राम
राम		राम
राम	जडी संजीवण मुरदे को जिवित करती ।	राम
	घटना-बहते नदीमें एक ओरसे संजीवन बुटी बहते आती और दुजे ओरसे मुरदा बहते	
राम	जाता । वि क राहरा क उरामा त तमान । नुटा नुत्व क नुख म भा करा। भारतत	
	मुरदा जिवित हो जाता । मुरदे ने कोई ऐसा मरने के बाद पुन:जिवित होना ऐसी कोई करनी नही की थी,फिर भी वह जिवित हुवा । अगर वह जिवित नही होता तो संजीवनी	
राम	बुटी का मुरदे को जिवित करने का ब्रिद जाता ।	राम
राम	इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता रहती । शिष्य करणीका कैसे भी निच रहा और सतगुरु के	राम
राम	शरण में बिना सोचे समजे ना समज में आया तो भी वह शिष्य सतगुरु के सत्ता से काल	
	के परे के महासुख के अगम देश पहुँचता ही पहुँचता ।	राम
राम	आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जैसे किसी को अमृत पिलाया तो अमृत	
राम	पिनेवाला जीव कई जन्मोतक अमर हो जाता ।(संतोने महाप्रलयतक बताया है याने	
राम	रोगोसे वह महाप्रलय तक नहीं मरता परंतु अन्य Accident आदि दुजे कारणों से जरुर	
	मर सकता)इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता है । यह सत्ता शिष्य को अमृतरुपी शब्द पिलाकर अमरलोक पहुँचा कर सदा के लिये अमर करती ।।।५।।	राम
राम	ब्होक्तं काट न लागे कोई ।। ओ प्राक्रम सतगुर मे होई ।।६।।	राम
राम	जैसे पारस यह पत्थर है । उस में यह पराक्रम है कि उसके पराक्रमसे लोहा सोना बन	राम
राम	जाता । लोहे का सोना बनने पे उस सोने को याने पूर्व लोहे को सोना बनने के पहले	
राम	काट लगता था और उसका विनाश होता था वह काट अब नही लगता ।	राम
राम	इसीप्रकार सतगुरु में पराक्रम है । शिष्य सतगुरु को मिलने के पश्चात शिष्य को बारबार	
राम	जनमने-मरने का काट नहीं लगता । एक बार शरीर छोडा की वह अमरलोक ही जाता	राम
	्र अर्थकर्ते · सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामदारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	
राम राम		7

		।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
;	राम	फिरसे जन्मना,बुढा होना,मरना इस चक्कर में नही आता ।।।६।।	राम
,	राम	कल ब्रछ पूरे मन की आसा ।। युं सतगुर हे सुख की रासा ।।	राम
		चित्रावण चिंत्या फळ पावे ।। युं सतगुर निज नांव बतावे ।।७।।	
		जैसे कल्पवृक्ष मनके कल्पनानुसार मायाके सुखोकी चाहना पुरी करता इसीप्रकार सतगुरु	
		जीव के निजमन के सुखो की चाहना पुरी करता । सतगुरु कल्पवृक्ष से बढकर सुख का	राम
;	राम	भंडार है। चिंतामनी,जीव जिन जिन सुखो की चिंतन करता वह पुरी करता।	राम
;	राम	जैसे-एक मूरख को चिंतामनी मिला । वह मूरख तो चिंतामनीके गुण को जानता नहीं था	
;	राम	परंतु उसके हाथ मे चिंतामनी था और हाथ में चिंतामनी होने के कारण जैसे चिंतन करता वैसे हो जाता । उसे रास्तेसे चलते चलते भूक लगी तब उसने मन में चिंतन किया	
		कि कुछ खानेको मिला तो अच्छा होगा ऐसा चिंतन करते ही वहाँ मिठाईकी थाली आई ।	
		वह मिठाई खाके उसने चिंतन किया कि खाने को तो मिल गया कितु पानी चाहिये ऐसे	
		निवन करते ही स्वरूप निर्मल शंदा पिने जैया पानी उतान हता । हम मुख्य को पानी	
7	राम	पिने के बाद छाँव में बैठने का मन में आकर चिंतन किया कि यहाँ छाँव में बैठने के लिये	
7		मकान होता तो छाँव में बैठा होता । यहाँ पे मकान चाहिये ऐसा चिंतन करते ही हवेली	
		महाल तयार हो गया । उस मकान में बैठकर सोने की इच्छा की तो	
;	राम	पलंग,नोकर,चाकर,दास,दासी होते तो सभी का उपभोग लिया होता । तो ये होना चाहिये	राम
;	राम	ऐसे कहते ही पलंग,दास,दासी,नोकर,चाकर सभी हो गये।	राम
,	JIII	इसीप्रकार सतगुरु शिष्य को निजनामरुपी चिंतामनी बताकर शिष्य का निजमन जो जो	राम
		अनंत सुखो की चाहना करता वह पुरी करता ।।।७।।	
	राम	जुरा काळ जम को डर भागे ।। जे निज नाव सिष मे जागे ।।८।।	राम
7	राम	ऐसा चिंतामनी रुपी निजनाव शिष्य में प्रगट हो जानेसे जीव के बारबार जनम होकर बुढापे	राम
;	राम	के दु:ख भोगना एवम् काल याने जम के जालिम कष्ट पलपल सहना ये सभी भारी दु:ख नष्ट हो जाते और सदा पलपल में अमरापूर में महासुख मिलते ।।।८।।	राम
;	राम	सतगुर सत्ता कही नही जावे ।। नग पंखि हीरा निपजावे ।।	राम
;	राम	ओ इचरज मानो मत कोई ।। कीट पलट भंवरा किम होई ।।९।।	राम
;	राम	सतगुरु सत्ता का पराक्रम कहे नही जाता । जिसप्रकार नगपंखी समुद्र में हिरे निपजता	राम
		इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता शिष्य के घट में हिरे समान अनंत सुख निपजाती ।	
	XI41	नगपक्षी की हिरे बनाने की विधी-	राम
•	राम	भंवरा अपने पराक्रम से कीट याने अली का देह पलटाकर उसे भंवरा बना देता । यह एक	राम
		देह से दुजा देह बनाना जगत के नरनारी को आश्चर्य लगता परंतु गुरु महाराज कहते है	राम
;	राम	ये आँखो देखे होता इसमे आश्चर्य क्या है? इस भंवरे के सत्ता में ये गुण कुद्रतीही है।	राम
;	राम	इसीप्रकार सतगुरु की सत्ता में है । सतगुरु की सत्ता से ५ तत्व का मरनेवाला देह अमर	राम
		अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट	
	•	of the control of the	

राम सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित सांई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम	राम		राम
पेसा तेजस्वी बन जाता ।।।९।। अमर बिवाण सीस चल आवे ।। पाँचू स्यान गेब सूं पावे ।। एम प्रम यं सता सदगुर की भाई ।। जागे सबद सिष के माई ।।१०।। अमर विमानके छायाके निचे कोई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण होता कि छाया के राम निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान (मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्येज्ञान, केवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट मे पांचो ज्ञान के साथ पाम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता पाम पान ।।।१०।। एम पम सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।। पम असे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरिद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी पाम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग पाम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पाया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन पाम बहा विष्या को सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता । भाम महिशा पान करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता । महिशा बात को सतगुरु सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। पाम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। पाम असे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जीतिल हो जाते ।।।१२।। पाम की चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम	राम	अखंडीत ध्वनी तत्व का बन जाता । आज दिनतक काल जिस ५ तत्व के देह को चबा	राम
प्सा तंजस्वा बन जाता ।।।।।। अमर बिवाण सीस चल आवे ।। पाँचू ग्यान गेब सूं पावे ।। यम युं सता सदगुर की भाई ।। जागे सबद सिष के माई ।।१०।। यम अमर विमानक छयाक निचे कोई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण होता कि छया के निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्वेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । यम निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्वेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । यम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानो बनता राम सतगुर सता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।। यम असे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरिद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम आर्थ साथ स्तरगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह पाम अरेर इच्छा पाया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता यम नही था उसे सतगुरुक का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। सत्त गुर सत्ता जीव किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरुक के सत्ता से जीव जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रुस, गांध ये पांचो भोगे पशु बुधदी के समान वेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेते ।। अर्थ ऊर्ध विच रामन खेले ।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेते ।। अर्थ ऊर्ध विच रामन खेले ।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेते ।। निक नेण खुले घट माँई ।।१३।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेते ।। निक नेण खुले घट माँई ।।१३।। सत्त गुर के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को लागु साम स्तित्र के शरण में आकर को शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को लाग स्तित्र सांस स्तित्र सेता सेता सेता सिष स्ता सेता सेता सेता सेता सांस स्राग्व सेता सेता सेता सेता सेता सेता सेता सेता	राम		राम
पाम युं सता सदगुर की भाई ।। जागे सबद सिष के माई ।। १०।। पाम युं सता सदगुर की भाई ।। जागे सबद सिष के माई ।। १०।। पाम अमर विमानक छ्याके निचे कोई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण होता कि छ्या के निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान , श्रुतज्ञान , अवधीज्ञान , मनपर्वेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । पाम जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट मे पांचो ज्ञान के साथ पाम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता पाम सतगुर सता सिष यूं लेवे ।। साथ साथकर सब जुग सेवे ।।११।। पाम जेसे हुमायु पंछी के छ्या के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी पाम अरीर से एकटम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग पाम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साथू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह आप ज्ञान हो था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही उलोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन् पाम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । पाम पान विष्य को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जोते होते । सतगुरु सत्ता जीव यूं जामे ।। चमक पथर लोहा उड लामे ।। पाम पान पान के लोहका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जोते होते । सतगुरु सत्ता जीव यो जाम तही वा तो ।।।१।। पाम पान पान सत्ता पुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। पान पान सत्ता पुरा के सिष झेले ।। अर्थ उर्ध के समान चेतन हो जाते ।।।१।। पान पान पान सत्ता पुरा के सिष झेले ।। अर्थ उर्ध विच रामत खेले ।। पान पान पान पान चेतन हो जाते ।।।१।। पान पान पान पान चेतन हो जाते ।।।१।। पान पान पान चेतन हो जाते ।।।१।।। पान पान पान चेतन हो जाते ।।।१।।। पान पान चेतन हो जाते ।।।१।।। पान पान चेतन हो जाते ।।।१।।।। पान पान चेतन हो जाते ।।।१।।। पान चेतन चेतन हो जाते ।।।१।।।। पान चेतन चेतन हो जाते ।।।१।।। पान चेतन चेतन हो जाते ।।।१।।।। पान चेतन चेतन हो जाते ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।			
शम विमानके छायाके निचे कोई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण होता कि छाया के राम निचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्चेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । राम जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट मे पांचो ज्ञान के साथ राम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता ।।।।।।।।। राम छाया हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्वाई कहे म्हाराजा ।। सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।।। राम असे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी गाम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग गाम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग गाम साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता गाम नहीं था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन्य गाम महश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम याम अस्ता पुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। असे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रूप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरूप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्थ उर्ध विच रामत खेल ।। सास उसास रटे नित सांई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुर के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम		5 , 5 ,	
तिचे आनेवाले हंस को अचानक न जानते ५ ज्ञान(मतज्ञान ,श्रुतज्ञान ,अवधीज्ञान ,मनपर्चेज्ञान, कैवल्यज्ञान)प्रगट हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । राम जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट मे पांचो ज्ञान के साथ राम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता राम आग होगा हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता राम आग होगा हो जाता । फिरे द्वाई क्हे म्हाराजा ।। राम असे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरिद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम साथ जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । राम साथ जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह साथ और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता राम नहीं था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन्य पान ही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन्य पान सितगुर सत्ता गुर सत्ता गुर के माहि । जड पश्चा चेतन होय जाई ।।१२।। राम असे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जोते होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। राम सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्थ उर्ध बिच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।।			
पान प्राप्त होता हो जाते वैसेही सतगुरु की सत्ता है । पान जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट में पांचो ज्ञान के साथ प्राप्त सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता प्राप्त साम ।।।१०।। पान छाया हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्वाई क्हे म्हाराजा ।। सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।१९।। जैसे हुमायु पंछी के छ्रया के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी पान शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम शाय जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साथ जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह सम्य पुजानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह पान वही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन प्राप्त वहा वहा विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । प्राप्त वहा वुण्य सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। पान सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। पान जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम पान के के वालयुक्त मायावी सुखो के परे के सतस्वरुप के महासुखो के लिये जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सात उसास रटे नित साई ।। निर्मक नेण खुले घट माँई ।।१३।। सत्त गुर सता सेज सिष झेले ।। अर्ध उर्ध विच रामत खेले ।। सात उसास रटे नित साई ।। निर्मक नेण खुले घट माँई ।।१३।।	राम	अमर विमानक छायाक निच काई मनुष्य आ जाता उसका यह गुण हाता कि छाया क	राम
राम जो शिष्य सतगुरु की सत्ता में आता है उस शिष्य के घट में पांचो ज्ञान के साथ राम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता राम गान हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता राम गान जैसे हुमायु पंछी के छ्रया के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम शरीर के एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम साथू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह आया पुजानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह पाम वही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अप सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अप सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अप पाम सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अप पाम सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। सत्ता प्रम के वालयुक्त मायावी सुखो के परे के सतस्वरुप के सत्ता से जीव पाम पाम सत्ता गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्थ उस्थे बिच रामत खेले ।। सत्त्युरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्थमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्थमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्थमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्थमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम राम	राम	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	राम
राम सतशब्द प्रगट हो जाता और वह शिष्य सतगुरु के समान वैराग्य विज्ञानी ज्ञानी बनता राम ।।।१०।। राम छाया हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्वाई क्हे म्हाराजा ।। सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साथ साथकर सब जुग सेवे ।।१९।। राम जैसे हुमायु पंछी के छ्या के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साथू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह राम और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता राम नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । सत्ता गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अा सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्चा चेतन होय जाई ।।१२।। राम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्थ उर्ध विच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३॥। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम	राम		राम
शाम छाया हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्वाई क्हे म्हाराजा ।। सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।१९॥। जैसे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी गण शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साथू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह राम और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता राम नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । साम पाम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्चा चेतन होय जाई ।।१२।। याम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। जम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अम स्वाया वेतन होय जाई ।११२।। याम सत्त गुर सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्चा चेतन होय जाई ।११२।। याम सत्त गुर सत्ता के किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जागृत होते । सतगुरुर सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रुस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध उर्ध विच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३॥। राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम			
प्राम हमाव हुवे रंक राजा ।। फिरे द्वाई क्हे म्हाराजा ।। सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।। उसे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरिद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम पान भी सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ॥ जड पश्वा चेतन होय जाई ॥११॥। उसे चंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रूप,रस, गृंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ॥१२॥ सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ॥ अर्ध उर्ध विच रामत खेले ॥ सास उसास रटे नित साई ॥ निर्मळ नेण खुले घट माँई ॥१३॥ सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम साम साम साम खेल को राम साम साम साम खेल को राम साम साम खेल को राम साम साम साम साम खेल को राम साम साम साम खेल को राम साम साम खेल को राम साम साम साम खेल को राम साम साम खेल को राम साम साम खेल को राम साम साम साम साम खेल को राम साम साम साम साम साम साम साम साम साम स			
सतगुर सत्ता सिष यूं लेवे ।। साध साधकर सब जुग सेवे ।।११।। जैसे हुमायु पंछी के छाया के निचे कितना भी दिरद्री मनुष्य आया तो भी वह मनुष्य उसी राम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । उस माधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन शाम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। पाम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। जो सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। जम चंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जगृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। पाम सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध उर्ध विच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम			
शाम शरीर से एकदम महाराजा हो जाता । और उसका सारे देश में हुकूम आदेश चलने लग राम जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता पम नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अप सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्चा चेतन होय जाई ।।१२।। जस वंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्थ ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्थ उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम साम जान स्वा स्वा स्व	राम	-	राम
जाता और सारे देश परदेश के लोग उसे महाराजा कहने लगते । इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता गन्ही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन वाम पाम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । यम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। अा सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव यम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम	राम		
इसीप्रकार सतगुरुमें सत्ता रहती । इस सत्ता का शरणा जो शिष्य लेता उसे परमात्मा का साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह यम और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता यम नहीं था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिकों के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। यम आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। यम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव यम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध उर्ध विच रामत खेले ।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम	राम		राम
साधू जानकर जगतके मनुष्य तथा ब्रम्हा,विष्णू ,महेश,शक्ती से लेकर होनकाल पारब्रम्ह राम और इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता राम नहीं था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही उलोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिकों के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। राम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उडकर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम राम	राम		
अर इच्छा माया पुजते और उसकी सेवा करते । जिसे कलतक एखाद मनुष्य भी जानता राम नही था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । पाम पाम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। पाम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव पाम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतक समान चेतन हो जाते ।।।१२।। सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सास उसास रटे नित साई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम राम	राम		
नहीं था उसे सतगुरु का शरणा मिलते ही ३लोक के मालिक ब्रम्हा,विष्णू ,महेश और इन राम ब्रम्हा,विष्णू , महेश मालिको के भी मालिक होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा पुजने लगते । राम पान	ग्रम		
प्रम प्रम ।।११।। पम सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। पम आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। पम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। पम सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम		g	
सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। राम अा सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२॥ राम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम राम राम राम राम राम राम राम		O CI	
सत्त गुर सत्ता जीव यूं जागे ।। चमक पथर लोहा उड लागे ।। आ सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। राम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम राम राम राम राम राम राम राम	राम		राम
राम अा सुण सत्ता गुरा के माई ।। जड पश्वा चेतन होय जाई ।।१२।। राम जैसे चुंबक को लोहेका किस उड उड़कर लगता ऐसे ही सतगुरु के सत्ता से जीव राम राम जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गांध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। राम राम राम राम राम राम राम र	राम		राम
राम	राम	O	राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम	राम		राम
जागृत होते । सतगुरु सत्तामें यह गुण है कि शब्द,स्पर्श,रुप,रस, गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। राम राम राम राम राम राम राम र		S S S S S S S S S S S S S S S S S S S	
गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।। राम राम राम राम राम राम राम र		जागत होते । सतारू सत्तामें यह गण है कि शहर स्पर्श रूप रस	
राम सत्तर्वराव विज्ञान वरागा सतक समान वर्तन हा जात ।।।१२।। राम सत्त गुर सत्ता सेज सिष झेले ।। अर्ध ऊर्ध बिच रामत खेले ।। राम सास उसास रटे नित सांई ।। निर्मळ नेण खुले घट माँई ।।१३।। सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम राम राम राम राम राम राम राम		गंध ये पांचो भोगमें पशु बुध्दी के समान अतीलिन हुये जड जीव भी	
राम सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम	राम	सतस्वरुप विज्ञान वैरागी संतके समान चेतन हो जाते ।।।१२।।	राम
सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को राम	राम		राम
with the second	राम		राम
V V	राम	सतगुरु के शरण में आकर जो शिष्य अर्ध उर्धमें याने सांस उसांस में राम नाम खेल को	राम
अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार -रामदारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र		अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	

		।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।।	राम
रा	म	नित्य खेलायेगा याने नित्य रटन करेगा उसके घटमे सतगुरु के सत्ता के कृपासे मलरहीत	राम
रा	म	अगम देश के निर्मल आँखे खुलेगी ।।।१३।।	राम
रा	म	ऊगा सूर भया उजीयाळा ।। भ्रम क्रम मेटया अंधीयारा ।। ब्होरू तिमर न ब्यापे कोई ।। झिग मिग जोत उदे घट होई ।।१४।।	राम
र ा	н	जगत मे जैसे सुरज उगने पे सारे सृष्टीका अंधियारा मिट जाता ऐसेही सतगुरु सत्ता के	राम
		कृपा से शिष्य के घट में विज्ञान ज्ञान का प्रकाश होता । इस विज्ञान ज्ञान के प्रकाश से	
		हंस के सभी भ्रम(भ्रम कौनसे-वेद,व्याकरण,शास्त्र,पुराण तथा त्रिगुणी माया में पूर्ण सुख	
रा	म	खोजने का स्वभाव आदि)तथा आजदिनतक किये हुये सभी कर्मो से आया हुवा अंधापन	राम
		मिट जाता । ऐसे विज्ञान ज्ञान की झिगमिग झिगमिग ज्योत शिष्य के घट में उदीत होने	राम
रा	म	के बाद भ्रम तथा कर्म का अंधियारा शिष्य के घट में पुन:कभी भी नहीं प्रगटता ।।।१४।।	राम
रा	म	ज्यूं मुख दीसे दर्पण मांई ।। अरस परस सेवग अर सांई ।।	राम
रा	म	कोटक भाण हुवा उजीयारा ।। दिल हीमे साहेब दीदारा ।।१५।।	राम
		जैसे कांच में देखनेवाले को अपना मुख अरसपरस दिखाई देता वैसे शिष्य को घट में साई अरसपरस दिखाई देता ।	राम
		जैसे जगत मे सुरज उगने पे प्रकाश सभी ओर होता वैसेही सतगुरु के विज्ञान सत्ता के	राम
		कृपा से मेरे घट में करोड़ो सुरज के समान विज्ञान ज्ञान का उजियारा हुवा । मेरे	
	ा म	निजदिल में (• निजदिल) साहेब के नित्य दर्शन हो रहे ।।।१५।।	
		इम्रत बुंद झ डे कण मोती ।। दीपक ग्यान झिलामिल जोती ।।	राम
	म	मनपा पपर पर मन माइ ।। ज्या देखु ज्या सतगुर साइ ।। १६।।	राम
रा		जैसे बारीश के दिनों में पानी के बुँद झड़ते तथा कभी मोती के समान ओले गिरते ऐसे	
रा	म	शिष्य के घट में अमृत के ओलो की और बुँदो की झड़ लगती । जैसे दिपावली के दिन मे	
रा	म	दिल को मोहित करनेवाली दिपक की झिलामिल सभी ओर दिखती ऐसेही विज्ञान ज्ञानरुपी दिपक की झिलामिल मेरे पूरे घट मे लग गई । यह सभी इचरज की चिजे	राम
रा	म	देखकर मेरा निजमन सतगुरु के सत्ता का निजमन में ही आश्चर्य करने लगा । जैसे सती	
		स्त्री को पुरी दुनिया में सिर्फ उसका ही पती एकमात्र पुरुष दिखता और अन्य पुरुष	
		बालक दिखते ऐसा मुझे घट में तथा घट के बाहर सिर्फ सतगुरु साई दिखता बाकी सभी	
र	म म	देवी-देवता तथा मनुष्य काल तथा काल ने मारे हुये मुरदे दिखते ।।।१६।।	राम
	म	सत् गुरजी की मे बल् जाई ।। अे सो भेद दियो ्मुज् आई ।।	राम
		तन देवळ बिच आत्म देवा ।। निर्गुण भक्त भजन ओ भेवा ।।१७।।	
		ऐसे सतगुरुजी के सत्ता के चरणो में मेरा प्राण न्योछावर है। जैसे जगत में देवता और उनके मंदिर रहते ऐसेही सतगुरुने अपने सत्ता से मेरा ही घट	राम
		मंदिर बना दिया और उस मंदिरमे मुझे आत्मा का देवता परमात्मा देखने का भी भेद दिया	
र	म	तपर न त विका जार जरा तापरत पुरा जारता कर प्यरा गरनारना पुळत कर ना नप विका	राम
		अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	

।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम राम तथा उस निरगुण साई की भजन भक्ती करने का भी भेद दिया । राम भिरम्का साई - तारमेन्ह सपस्वस्त ० दीनोमंभी त्रिग्धी राम राम भाग सरीखे गिरो निही परंतु केने निरगुण साई सुख का सागर है राम राम भिरगुठ) cp160 - U1रप्रमर् सायमान् जमीन और निरगुण काळ दु:ख का राम राम भंडार है । ।।१७।। 15 dosan rap राम राम राम राम पेम फूल मनवा ले आवे ।। चित्त का चंदण ले च्रचावे ।। सेवा बंदन आर्ती कीजे ।। तन मन वार अमीरस पीवे ।।१८।। राम राम राम जैसे देवता के लिये भक्त फुल और फुलो के हार लाते ऐसा मेरा निजमन सतस्वरुप साई राम के लिये प्रेम के फुल लाता और जैसे देवतावों को भक्त चंदन चरचाते वैसे मेरा निजचित राम सतस्वरुप साई को प्रिती के चंदन चरचाता । इसप्रकार सतगुरु के सत्ता से घट मे प्रगट राम राम ह्ये सतस्वरुप ने:अंछर साई की सेवा और बंदगी करो । ये शरीर और मन सतगुरु के राम चरणो में न्योछावर करो और विज्ञान ज्ञान का अमृत पिवो ।।।१८।। राम धूप ध्यान लागो दिन राती ।। दिपक ग्यान प्रीत की बाती ।। राम राम सुखमण कळस अमी भर लाई ।। झिग मिग झिग मिग मिंदर मांई ।। १९।। राम राम जैसे जगत में साधू ध्यान लगाते वक्त धूप रात-दिन जलाता वैसे सतस्वरुप का ध्यान राम राम लगाते वक्त प्रेम का धूप रात-दिन जलावो । जैसे मंदिर में दिपक में कपास की बत्ती राम रखकर बत्ती को चेताते वैसे तन मंदिर में विज्ञान ज्ञान के दिपक में ज्ञान की प्रित की राम बत्ती चेतावो । जैसे मंदिर में महिला भक्त पानी के कलस भर के लाती वैसे तन मंदिर में राम सुखमना अमृत के कलस भर लाती । जैसे मंदिर में दिपको के कारण सुहावनी झिगमिग राम झिगमिग होती वैसे मेरे घट मे विज्ञान ज्ञान के दिपको की लुभावनी झिगमिग झिगमिग राम लगी ।।।१९।। राम राम मुरळी बीण बजे सुरनाई ।। संख की घोर गिगन घर छाई ।। अनहद झालर का झणकारा ।। रूम रूम बोले रंरकारा ।।२०।। राम राम राम जैसे मंदिर में भक्त मुरली बजाते,बीण बजाते,सुरनाई बजाते वैसे मेरे घट में ने:अंछर के राम सत्ता से मुख से बिना बजाये मुरली,बीण और सुरनाई बज रही । मंदिर में भक्त संख राम राम बजाते और उस संख की घोर आवाज से मंदिर छा जाता वैसे मेरे पुरे घट में गिगनतक राम ने:अंछर के सत्ता से मुखसे बिना बजाते हुये संख घोर आवाज गिगन घर तक छा गया । राम जैसे भक्त मंदिर में झालर बजाता और उसके झनकार मंदिर में सभी ओर सुनाई देते राम वैसे मेरे घटमे सतगुरु सत्ता के कृपासे हाथ से झालर न बजाते झालर के समान पुरे घट में गिगन घर तक झनकारे सुनाई दे रहे है । जैसे मंदिर मे नरनारी राम राम राम क राम राम अर्थकर्ते : सतरवरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट

।। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। ा। राम नाम लो, भाग जगाओ ।। राम राम सरीखी धुन बोलते वैसे मेरे शरीर में पुरे ३५०००००(३कोटी ५० लाख)रोम में अखंडीत राम ररंकार की ध्वनी लग गई ।।।२०।। राम राम जन सुखराम सता आ जागी ।। ब्रम्ह समाध ब्रम्हंड मे लागी ।। दसवे द्वार करे हंस केळा ।। अनंत कोट संतन का मेळा ।।२१।। राम राम राम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु की सत्ता जागृत होने पे हंस राम ब्रम्हांड में पहुँचता और सदा के 44130 और सल्ता राम राम लिये ब्रम्हांड में दसवेद्वार पाभित होने ते GK GHOIS राम राम 4HOLA रहता और वहाँ हंस हैस cos co+100 के सत्ता पहले भे जाल्कर राम राम के सतस्वरुप ब्रम्ह साथ विरता। कुंठ कमारक त छाड हैता श्रीर समाधी लगती । रहता राम राम राम राम राम राम वहाँ दसवेद्वार में अनंतकोटी संतो का मेला है । दसवेद्वार पहुँचने पे हंस का अनंत कोटी राम राम संतो के साथ मेल मिलाप होता और वहाँ पे हंस संतो के साथ अनेक प्रकार की नित्य राम नई नई खेल क्रिडाये करता ।।।२१।। राम अ सो समीयो सदा हमारे ।। आँठो पोहर संज्या क्या संवारे ।। राम राम जन सुखराम अमर घर पाया ।। जामण म्रण मोहो नही माया ।।२२।। राम राम मेरा उन संतो के साथ नाना भाँती की खेल क्रिडा खेलनेमें आठोपोहोर,सुबह शाम बितता राम ऐसा आनंद मगन का समय मेरा हमेशा रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते राम है कि ऐसा काल के दु:खो से मुक्त और महाआनंद देनेवाला अमर घर मैने पाया । मैने <mark>राम</mark> ऐसा अमरघर (अमरलोक)पाया की अब मेरा काल के महादु:खो में जनमने का,मरने का राम भय सदा के लिये खतम् हो गया । इसीप्रकार काल के देश में ढकलनेवाले राम माता,पिता,पत्नी,पुत्र,धन,राज,पदवी आदी मायावी वस्तूवो में की मोह माया खतम् हो राम राम गयी ।।।२२।। दोहा ॥ राम राम जन सुखिया सतगुर सत्ता ।। मोपे कही न जाय ।। राम राम ज्यूं मूज बरती आय के ।। सो बिध कही सुणाय ।।२३।। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतगुरु की सत्ता मैने चाँद और राम चकोरपक्षी, दिपक राग,चंद्रमणी हिरा और कांच,भुजंग और चंदन,संजीवनी बुटी और राम मुरदा,लोहा और पारस,कल्पवृक्ष,चिंतामनी,नगपक्षी,अमृत,हुमायु पक्षी और दरिद्री,चमक<mark>राम</mark> पत्थर और लोहे का किस आदि मायामें के उदाहरण देके जगतको समजाया परंतु सतगुरु राम सत्ता इतनी अगाध है कि वह मुझे कोई भी दाखला देकर जैसेके वैसे समजाते नही आयी राम राम अर्थकर्ते : सतरवरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव - महाराष्ट

राम		राम
राम	और नहीं आयेगी । सतगुरु सत्ता की जो विधी मुझमें बरती वह मैने माया के शब्दों में	राम
राम	समजाते आती मतलब ज्ञान से वर्णन करते आती वह सारे दाखले देकर मुझमे प्रगट हुये	राम
राम	विधी को बताया ।।।२३।। ।। इति सत्त गुरूसत्ता को अंग संपूरण ।।	राम
राम	म श्रेस रास पुरुरासा का अन सनूरण म	राम
राम		राम
राम		राम
		राम
राम	La contraction de la contracti	राम
	अर्थकर्ते : सतस्वरूपी संत राधाकिसनजी झंवर एवम् रामरनेही परिवार, रामद्वारा (जगत) जलगाँव – महाराष्ट्र	